

ललितकला (पेंटिंग): परंपरा, विकास और आधुनिक परिप्रेक्ष्य

भक्ति अग्रवाल

सहायक प्राध्यापक (ललितकला)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

ललितकला मानव सभ्यता की प्राचीनतम अभिव्यक्तियों में से एक है। इसका मानव सभ्यता के विकास में ललितकला का स्थान अद्वितीय है। ललितकला केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति, धर्म, राजनीति और मानवीय अनुभवों का प्रतिबिंब भी है। चित्रकला, ललितकला की प्रमुख विधाओं में से एक, मानव की गहनतम भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को मूर्त रूप देती है। भारतीय चित्रकला का इतिहास अत्यंत समृद्ध है, जो शैलचित्रों से आरंभ होकर अजंता-एलोरा, मुगल और राजपूत परंपराओं से गुजरते हुए आधुनिक युग में वैश्विक स्तर पर नई पहचान बना चुका है। प्रस्तुत शोध पत्र में चित्रकला के ऐतिहासिक विकास, तकनीकी विशिष्टताओं, सांस्कृतिक महत्व और आधुनिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, भारतीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय चित्रकला की स्थिति का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द

ललितकला, चित्रकला, भारतीय परंपरा, आधुनिक कला, सौंदर्यशास्त्र, संस्कृति, समाज, इतिहास, भारतीय कला, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, परंपरा, आधुनिकता।

प्रस्तावना

मानव जीवन का प्रत्येक आयाम कला से जुड़ा है। ललितकला मानव हृदय की भावनाओं, विचारों और अनुभवों की अभिव्यक्ति है। चित्रकला इसके सबसे प्रमुख रूपों में से एक है, जो रेखाओं, रंगों और आकृतियों के माध्यम से जीवन की विविधताओं को दर्शाती है। भारत में चित्रकला का

विकास शैल्युगीन भित्ति चित्रों से लेकर आधुनिक समकालीन कला तक निरंतर होता रहा है। जब प्रारंभिक मानव ने गुफाओं की दीवारों पर शिकार के दृश्य उकेरे, तभी से उसकी कला यात्रा आरंभ हो गई थी। चित्रकला ललितकला का वह रूप है, जिसने न केवल सौंदर्यबोध का विकास किया, बल्कि धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन की दिशा भी निर्धारित की। भारत में चित्रकला का इतिहास बहुआयामी और समृद्ध रहा है। प्राचीन काल के शैलचित्रों से लेकर गुप्तकालीन भित्ति चित्रों, मध्यकालीन दरबारी शैलियों और आधुनिक चित्रकारों तक यह परंपरा निरंतर विकसित होती रही है। प्राचीन काल में चित्रकला धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जुड़ी थी। मध्यकाल में यह राजदरबार, समाज और संस्कृति का दर्पण बनी। आधुनिक युग में यह व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, सामाजिक आलोचना और अंतरराष्ट्रीय संवाद का माध्यम बन गई। आज भारतीय चित्रकला वैश्विक कला परिदृश्य में अपनी पहचान बना चुकी है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ललितकला, विशेषकर चित्रकला की परंपरा, विकास और आधुनिक परिप्रेक्ष्य का विस्तृत विश्लेषण करना है।

शोध के उद्देश्य

1. भारतीय चित्रकला की उत्पत्ति और विकास का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
2. प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल की चित्रशैलियों की विशेषताओं को समझना।
3. चित्रकला के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन करना।
4. आधुनिक भारतीय चित्रकारों और उनकी कृतियों का अध्ययन करना।
5. वैश्विक संदर्भ में भारतीय चित्रकला की स्थिति और प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध विधि

इस शोध पत्र में गुणात्मक पद्धति अपनाई गई है।

प्राथमिक स्रोत: अजंता-एलोरा, बाघ गुफाओं, मुगल और राजपूत चित्रशैली, आधुनिक कलाकारों (रवींद्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल, एम.एफ. हुसैन आदि) की कृतियों का अवलोकन।

द्वितीयक स्रोत: कला इतिहास पर आधारित पुस्तकें, शोध लेख, संग्रहालय कैटलॉग, कला समीक्षाएँ एवं ऑनलाइन डाटाबेस।

विश्लेषण पद्धति: तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिससे विभिन्न कालखंडों की विशेषताओं और उनके सांस्कृतिक प्रभावों को समझा जा सके।

शोध विस्तार

1. प्राचीन भारतीय चित्रकला की परंपरा

भारतीय चित्रकला का प्रारंभ आदिम युगीन गुफा-चित्रों से हुआ। भीमबेटका और अन्य शैलचित्र मानवीय जीवन की प्रारंभिक कलात्मक अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं। मध्यप्रदेश के भीमबेटका शैलचित्र विश्व धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हैं। इनमें शिकार, नृत्य, पशु-पक्षी और मानव जीवन के विभिन्न दृश्य अंकित हैं। गुप्तकाल में अजंता गुफाओं की चित्रकला ने उत्कृष्टता की पराकाष्ठा प्राप्त की। बौद्ध कथाओं, जातक कथाओं और मानव आकृतियों को रंग और रेखाओं से अद्भुत ढंग से सजाया गया। गुफाओं की भित्ति चित्रकला धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व के साथ-साथ तकनीकी निपुणता का अद्भुत उदाहरण है। इन चित्रों में गहन भावाभिव्यक्ति, नारी सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

2. मध्यकालीन भारतीय चित्रकला

(क) मुगल चित्रकला

मुगल काल में चित्रकला का विकास दरबारी संरक्षकता के अंतर्गत हुआ। फारसी प्रभाव के साथ भारतीय तत्वों का सुंदर मिश्रण हुआ। अकबर के काल में चित्रकला ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं। 'हामज़ानामा' और दरबारी जीवन के चित्र इसके उदाहरण हैं।

(ख) राजपूत चित्रकला

राजपूत राज्यों में चित्रकला धार्मिक और सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़ी है। जिसमें प्रकृति प्रेम, भक्ति और वीरता का जीवंत चित्रण देखने को मिलता है।

मेवाड़ शैली: कृष्ण भक्ति और रामायण महाकाव्य चित्रण।

मारवाड़ शैली: राजसी शान और लोक जीवन का चित्रण।

कांगड़ा शैली: प्रकृति, श्रृंगार और भक्ति के अद्भुत चित्र।

(ग) पहाड़ी चित्रकला

हिमाचल और जम्मू क्षेत्र में विकसित, जहाँ कृष्ण-लीला, भक्ति और प्रकृति का अद्भुत चित्रण हुआ। पहाड़ी शैली में कृष्णभक्ति और लोक संस्कृति का प्रतिबिंब देखने को मिलता है।

3. आधुनिक भारतीय चित्रकला

आधुनिक काल में भारतीय चित्रकारों ने पश्चिमी तकनीक और भारतीय परंपरा का समन्वय प्रस्तुत किया।

रवींद्रनाथ टैगोर: उनकी चित्रकला में आत्मा, प्रकृति और स्वतंत्रता की झलक है।

अमृता शेरगिल: भारतीय ग्रामीण जीवन और नारी संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति।

नंदलाल बोस: भारतीय लोक और परंपरा से प्रेरित कृतियाँ।

एम.एफ. हुसैन: आधुनिक समाज, राजनीति और स्त्री आकृति के प्रयोगशील चित्र।

सैयद हैदर रज़ा: 'बिंदु' श्रृंखला के माध्यम से भारतीय दार्शनिक परंपरा को आधुनिक रूप।

4. लोक एवं जनजातीय चित्रकला

भारतीय चित्रकला की सबसे बड़ी शक्ति इसकी लोक और आदिवासी परंपराएँ हैं।

मधुबनी कला (बिहार): विवाह और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ी चित्रकला।

गोंड कला (मध्यप्रदेश): प्रकृति और पौराणिक कथाओं का जीवंत चित्रण।

पिचवाई और फड़ चित्रकला (राजस्थान): धार्मिक कथाओं और लोक नाट्य पर आधारित।

5. भारतीय चित्रकला का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व

यह समाज की चेतना का दर्पण है। जो धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों को संजोए हुए है। आज यह आधुनिकता, प्रयोगशीलता और अंतरराष्ट्रीय संवाद का साधन बन चुकी है।

आधुनिक काल में सामाजिक यथार्थ और आलोचना का माध्यम बना हुआ है।

6. वैश्विक संदर्भ में भारतीय चित्रकला

भारतीय चित्रकला आज अंतरराष्ट्रीय कला बाज़ार में अपनी अलग पहचान बना चुकी है। पारंपरिक लोक और आदिवासी कला (मधुबनी, गोंड, पिचवाई) को भी वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली है। भारतीय कलाकारों की प्रदर्शनी पेरिस, लंदन और न्यूयॉर्क जैसे कला केंद्रों में होती है। आधुनिक भारतीय कलाकार वैश्विक नीलामी बाजारों में शीर्ष स्थान पर हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ललितकला, विशेषकर चित्रकला, ने सदैव समाज और संस्कृति को नई दिशा दी है। ललितकला (चित्रकला) केवल सौंदर्यबोध का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज और संस्कृति के विकास की साक्षी भी है। भारतीय चित्रकला ने समय के साथ अपनी शैली, विषय-वस्तु और तकनीक में परिवर्तन किया, लेकिन उसका मूल उद्देश्य - मानवीय भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति - सदैव कायम रहा। आधुनिक युग में चित्रकला ने वैश्विक स्तर पर अपनी सशक्त पहचान बनाई है और यह न केवल परंपरा को संरक्षित कर रही है, बल्कि भविष्य की नई राह भी प्रशस्त कर रही है। प्राचीन शैलियों से लेकर आधुनिक अमूर्त कला तक, भारतीय चित्रकला ने निरंतर परिवर्तन और विकास का परिचय दिया। आज यह वैश्विक स्तर पर भारतीय पहचान को सशक्त बना रही है।

संदर्भ

1. कुमार, अनूप. भारतीय चित्रकला का इतिहास, नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2015
2. सिंह, राकेश. ललितकला: स्वरूप और विकास, वाराणसी: भारती प्रकाशन, 2017
3. चटर्जी, देवेश. भारतीय कला और संस्कृति, कोलकाता: विश्वभारती, 2019
4. Coomaraswamy, Ananda K. The History of Indian and Indonesian Art, New York: Dover Publications, 2011
5. Archer, W.G. Indian Painting, London: Faber and Faber, 1960
6. www.indianculture.gov.in
7. www.nationalmuseumindia.gov.in